International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 5.414 Volume 5, Issue 10, October 2018
Website- www.aarf.asia, **Email** :editoraarf@gmail.com

egkHkkjr lkfgR; e vk;qosZn

डा० इतेन्द्र धर दूबे
असिस्टेण्ट प्रोफेसर, चन्द्रकान्ति रमावती देवी आर्य महिला पी.जी. कालेज गोरखपुर

महाभारत ऐतिहासिक महाकाव्य है। महाभारत के विषय में डा० वासुदेवशरण vxoky us fy[kk gS fd& महाभारत इस देश की राष्ट्रीय ज्ञान lfgrk gA lnk उत्थानशील कृष्णद्वैपायन वेदव्यास ने विशाल बद्री के एकान्त आश्रम में बैठकर भारतीय Kku :ih len dk viuh विशाल बुद्धि से मन्थन किया, जिससे महाभारत रूपी चन्द्रमा dk tUe gvkA ftl idkj len vkj fgeky; jRuk dh [kku g] mlh idkj ;g egkHkkjr gA tks blesa g] ogh vU;= feyxk] tks ;gka ugh g og vU;= Hkh ugh gA

महाभारत एक ऐसा महत्वपूर्ण विश्वकोष है जो दर्शन, धर्म इतिहास, पुराण, Lefr] dk0; एवं आयुर्वेद आदि विषयों से परिपूर्ण है। अपनी इन्हीं विशेषताओं के dkj.k egkHkkjr dk ^ipe on* d :i e Hkh ekuk tkrk gA dgk x;k g &

धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च भरतर्शम्।
;fngkfLr rnU;= ;UugkfLr u dq=fprAA

0;kl th tuest; l dgr g fd g Hkkjr! /ke] vFk] dke vkj ek{k dk o.ku tk egkHkkjr e fd;k x;k g o lHkh o.ku ;fn egkHkkjr e g] rk vU;= Hkh n[k tkr gA ;fn egkHkkjr e ugh g] rk vU;= dgh Hkh ugh of.kr gA egkHkkjr में ऐसे अनेकों विषय iklr gkr g] tk vk;qosn l lEcfU/kr g] o fuEufyf[kr g &

1–मानव शरीर में दो प्रकार के शारीरिक एवं मानसिक रोग होते gA
2–शीत, उष्ण और वायु ये तीन शारीरिक रोगों के कारण तथा सत्व, रज, तम ये तीन eu d x.k cryk; x; gA
3&vU; xzUFkk dh Hkkfr egkHkkjr e Hkh Hkxoku /kUoUrfj d vorj.k lEcU/kh iz lx dk

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

mYy[k feyrk gA

Hkxoku /kUoUrfj dk vk;on d vkfnno d :i e Lej.k fd;k tkrk gA egkHkkjr e Hkxoku /kUoUrfj d vorj.k dk mYy[k fuEu idkj l fd;k tkrk gA vkfn io d v/;k;&18 e Hkh leneUFku l vkfnno /kUoUrfj d vorj.k lEcU/kh mYy[k of.kr gA

धन्वन्तरिस्सतो देवो वपुष्मानुदतिश्ठत।
भवेतं कमण्डलुं बिभ्रदमृतं निश्ठति।।

4–इसी प्रकार आयुर्वेद के अनेक आचार्यो का प्रसंगवश नामोल्लेख महाभारत में अनेक LFkkuk पर मिलता है। जैसे–अश्विनीकुमारों का देववैद्य के रूप में वर्णन, कृष्णात्रेय dk fpfdRld d :i e o.ku] अश्व–चिकित्सक के रूप में शालिहोत्र का o.ku] विश्वामित्र के पुत्र सुश्रुत का शल्य चिकित्सक के रूप में वर्णन एवं सर्पदंष्ट के विशिष्ट चिकित्सक कश्यप dk mYy[k feyrk gA

5&egkHkkjr e vud LFkyk ij vk;on d dfri; egRoi.k fl)kUrk dk mYy[k feyrk gA tl vk;on d eyHkr fl)kUr ipegkHkr] पंचमहाभूतों का शरीर में x.kde] lkfÙod] jktfld ,o rkefld iofÙk;k dk o.ku] okr] fir] dQ dk x.kde rFkk ikp idkj dh ok; dk o.ku ,o tBjkuy dk o.ku feyrk gA

6&vk; dh {k; of) dju oky Hkko] lthouh fo|k] जीव का गर्भ में प्रवेश, अश्विनीकुमारा द्वारा महर्षि च्यवन को पुनः यौवन प्रदान करना vkfn dk mYy[k feyrk gA

7&fofHkUu jkxk dk mYy[k tl Toj] ;{ek jkx] LdU/kxg ,o LdU/kkiLekj dk mYy[k e feyrk gA

8&fofHkUu jkxk d irhdkj dk mYy[k] tl&pUn d jkfg.kh ij vklDr gku l mld शjhj e jkt;{ek dh mRifr vkj mldh fpfdRlk] firjk rFkk nok d vth.k ,o xg.kh jkx dk irhdkj] अश्विनीकुमारों द्वारा मान्धाता के पेट का ikVu337 vkfn dk mYy[k feyrk gA

9–विभिन्न प्रकार के विष का प्रभाव, प्रतिकार एवं चिकित्सा, जैसे–कालकूट विष का mYy[k] gjrky ,o gMxy d x.k dek dk mYy[k] स्थावर विष को जंगम विष द्वारा नष्ट करना, विष से मुर्च्छित एवं उसका प्रतिकार, विष पर मन्त्रों का iHkko dk mYy[k feyrk gA

egkHkkjr dk le;

महाभारत में ये विषय कुछ परिवर्तित रुप में अवश्य मिलते gA d#{k= dh e[; ?kVuk dk mYy[k fdlh ofnd lkfgR; e ugh gA ijhf{kr पुत्र जन्मेजय तथा शकुन्तला–पुत्र भरत dk o.ku ckã.k xUFkk e feyrk gA ब्राह्मण साहित्य, उपनिषदों में महाभारत का नाम नहीं, bfrgkl] ij.k] xkFkk] नाराशंसी नाम feyr gA

;ton d xUFkk में यत्र–तत्र, कुरु–पंचाल तथा विचित्रवीर्य के पुत्र युधिष्ठिर के ;Kk का वर्णन मिलता है। परन्तु समस्त वैदिक साहित्य में पाण्डु, दुःशासन, युधिष्ठिर, n;k/ku] d.k vkfn egkHkkjr d ie[k ik=k dk uke ugh feyrkA ,d ckã.k xUFk e vtu uke vk;k g] og ogk bUn d fy, gA dkjo vkj ik.Mok d ;) dk निर्देश सबसे पहले पतंजलि ने किया है। युधिष्ठिर, अर्जुन का नाम पाणिनी के सूत्रों में vkrk gA

egkHkkjr dk igyk uke ^t;* Fkk] ble ijk.klfJr dFkk,] /kelfJr dFkk,] राजर्षियों के चरित्र जैसे मुख्य विषयों का ताना&ckuk d#&ik.Mok d t; uked bfrgkl d चारों ओर बुन दिया गया है। ययाति और परशुराम के बड़े–बड़े mik[;ku] ftUg 0;kdj.k e ;k;kr vkj vkf/kjke dgk x;k g] tk fdlh le; ykd e LorU= #i l ipfyr Fk] vkj fQj egkHkkjr e lxfgr gkr x;A egkHkkjr dk bl idkj l vkdkj c< x;k] tk गुप्तकालीन में शिलालेखों में 'शतसाहस्री' नाम से लिखा गया हैA egkHkkjr e Hkh ;g mYy[k g&

इदं भातसहस्रं तु भलोकानां पुण्यकर्मणाम्।

mik[;ku% lg K;ek|% HkkjreÙkeeA&egkHkkjr

महाभारत में अश्विनौ का उल्लेख चिfdRlk d lEcU/k e vkrk g&reik/;k;%

प्रत्युवाच, अश्विनौ स्तुहि। तौ देवभिशजौ त्वां चक्षुश्मन्तं कर्त्ताराविति।। स एवमुक्त उपाध्यायेनोपमन्युरश्विनौ स्तोतुमुपचक्रमे वाग्भिः ऋग्भिः।।

vk;qosn d vkB vax

आयुर्वेद आठ अंगों में विभक्त है। ये आठ अंग शल्य, शालाक्य, dk;fpfdRlk] कौमारभृत्य, भूतविद्या, रसायन, वाजीकरण और विष–गर–वैरोधिक प्रशमन हैं। egkHkkjr d सभापर्व में अर्थात् लोकपाल सभाख्यान पर्व में नारद युधिष्ठिर को प्रश्न के रुप में शिक्षा देते g, dgk g fd– हे युधिष्ठिर! क्या तुम शरीर के रोगों की fpfdRlk vोषध सेवन और पथ्य l djr gk]\ ekufld jkxk dk o)k d lou l rFkk lRlx l nj djr gk\ D;k rEgkj o| fpfdRlk d vkBk vxk e fui.k g]\ तुम्हारे शरीर के सम्बन्ध में क्या मित्र लोग अनुरक्त g]\ o rEgkj LokLF; dk /;ku j[kr g\

विश का नश्ट करने के उपाय

स्थावर विष को जंगम विष नष्ट करता है विष के दो भेद हैं –

1&LFkkoj vkj

2& txeA

इनमें जंगम विष अधोभाग में जाता है और स्थावर विष ऊर्ध्वगामी होता है। blfy, जंगम विष को साँप के विष को कहते हैं। स्थावर विष अर्थात् vfgQu] संखिया आदि को नष्ट

करता है। भगवान् शिव समुद्र मन्थन से उत्पन्न हलाहल विष dk fi;kA mud xy ij lki लिपटे हुए हैं, जिनके विष के प्रभाव से नीचे नहीं गया vkj mldk iHkko flj ij gvkA mldh xjeh dk de dju d fy, xxk dh शीतल धारा गिरने की कल्पना dh x;h vkj विष के प्रभाव की कालिमा को दूर करने d fy, ekFk ij pUnek dk LFkkfir fd;k x;k] ftldh |fr l ;g dkfyek fNi गयी। दुर्योधन ने भीम को जब विष दे दिया और उनके efPNr gku ij unh e fxjk दिया, तब वहाँ साँपों ने ही काटा। साँपों के दंश से उनका विष नष्ट हो गया था।

पापी दुर्योधन ने भीम के खाने की वस्तुओं में विष मिला दिया। जिससे भीम मर गये। विष के वेग से मूर्च्छित, निश्चेष्ट हुए भीम को लतापाशों से दुर्योधन ने स्वयं बाँधकर ty e धकेल दिया, पर साँपों के काटने से कालकूट विष नष्ट हो गया, क्योंकि स्थावर विष को जंगम विष ही नष्ट कर सकता है। विष के उतरने पर भीम जाग उठे vkj mlu viu lc cU/ku rkMdj lkik dk ekjuk ikjEHk fd;kA ykd e ;g ipkj g fd vQhe [kku oky dk साँप का विष नहीं चढ़ता। lEHkor% bldk ;gh vk/kkj gk कि स्थावर विष पर जंगम विष का iHkko ugh gkrk gA

विश पर मन्त्र का प्रभाव

विष प्रतिकार के उपायों में मन्त्रशक्ति का महत्त्व आयुर्वेद में of.kr g– देवर्षि, ब्रह्मर्षियों l dg ri] lR;e; eU= dHkh 0;Fk ugh gkrA ; vfr भंयकर विष को भी नष्ट कर देते हैं, सत्य, ब्रह्म और तपस्वी मंत्रों से जिस प्रकार विष नष्ट होता है, वैसा ओषधों से नहीं होता।

महाभारत में मन्त्रों का प्रभाव काश्यप द्वारा तक्षक साँप से कटे हुए वृक्ष को पुनः thfor करने से स्पष्ट होता है कि–सातवाँ दिन आने पर ब्रह्मर्षि काश्यप राजा परीक्षित d ikl tku लगे। रास्ते में तक्षक ने काश्यप को देखा और पूछा कि हे ब्रह्मन्! कहाँ bruh rth l tk jg हो। काश्यप ने कहा कि कुरुओं के राजा परीक्षित के पास जा jgk g] vkt r{kd lki dkVxk vkj e mldk thfor d#xkA r{kd u dgk fd e gh r{kd g&ej dkV g, dk re thfor ugh dj ldrA e bl o{k dk dkVrk g] re bl thfor dj nkx\ ;g कहकर तक्षक ने वृक्ष को काटा। काश्यप ने उस वृक्ष dh lkjh jk[k dk ,d= djd iu% ml thfor dj fn;kA lkjhf{kr u lki l cpu d fy, tk lk/ku ,d= fd; Fk mue eU= सिद्ध ब्राह्मण, ओषधियाँ vkj o| Hkh FkA

रक्षां च विदधे तत्र भिशज चौशधानि च।
ब्राह्मणान् मंत्रसिद्धां च सर्वतो वै न्ययोजयत्।।

jkt;{ek jkx

vf=i= u ;{ek jkx dk dkj.k vf/kd L=h lou l gku okyk शुक्रनाश बताया है। bl le>ku d fy, jktk pUnek vkj i tkifr dh vVBkbl dU;kvk d fookg dk ,d दृष्टान्त उन्होने कहा। सत्यवती पुत्र विचित्रवीर्य भी अधिक L=h lou l ;{ek jkx l आक्रान्तहुए थे। भिषकों से चिकित्सा कराने पर भी यह रोग नष्ट नहीं हुआ और अन्त में mudh eR; dk dkj.k cu x;kA

rkH;k lg lHkk% fogju ifFkohifr%A
fofp=oh;Lr:.kk;{e.kk lex árAA
lânk ;rekukukeklr% lg fpfdRld%A
txkekLrfeokfnR;% dkj0;k ;elknueAA

p=jFk ou

p=jFk ou dh iflf) lLdr lkfgR; e cgr ijkuh gA dknEcjh e महाश्वेता वर्णन ilx e fp=jFk xU/ko }kjk bld cuku dk mYy[k gA xhrk d foHkfr ikn e Hkxoku u गन्धर्वों में अपने को चित्ररथ बताया है। घोषयात्रा प्रसेग में }rou d vUnj n;k/ku] d.k vkfn dk fp=jFk xU/ko d lkFk ;) gkuk ifl) gA

dkfynkl u e?knr e p=jFk dk oHkkt uke l dgk gA egkHkkjr e Hkh oHkkt शब्द vk;k gA रघुवंश में भी कालिदास ने चैत्ररथ वन का उल्लेख किया है। blh p=jFk ou का उल्लेख चरकसंहिता में अत्रिपुत्र ने किया है जहॉ पर ऋषियों के lkFk cBdj jl विनिश्चय किया गया था। यह चैत्ररथ देवताओं और ऋषियों के रहने का स्थान था। इसका mYy[k vk;on e Hkh vk;k gA vk/kfud fp=ky gh p=jFk ou g] ,lk Hkh db fo}ku ekur gA

;) e o|

okgV u lxg e vkj /kUoUrfj u lJr lfgrk e jktk d lehi o| dk jgu dk mYy[k fd;k gA o| dk lnk jktk d [kku&iku rFkk vU; oLrvk dh n[kj[k djuh pkfg,A jktk dk mldh vkKk dk ikyu djuk pkfg,] क्योकि श्रेष्ठ हाथी भी बिना अंकुश d ituh; ugh gkrkA o| dk LFkku luk iMko e jktk d lehi gkrk FkkA mld Mj ij ,d /otk yxh jgrh FkhA ftl jMØkl dgr g tk nj l gh fn[kkb n tkrh Fkh] ftll ykx rjUr mipkj d fy, igp ldA ogk ij mld ikl lHkh midj.k jgr FkA o| lHkh vxk dh fpfdRlk dju e fui.k gkr FkA dyhu] vkfLrd] mÙke] ifjtukokyk] आलस्य रहित, क्रोध रहित, चतुर, समझदार भिषज के गुण होता FkkA dkfVY; u Hkh LdU/kkokj e fpfdRldk dk j[ku d fy, dgk gA

युधिष्ठिर ने अपनी सेना में सैकड़ों शिल्पी तथा शास्त्र विशारद वैद्य वेतन देकर रखे थे, o lc midj.kk l ;Dr FkA दुर्योधन शल्य चिकित्सकों के साथ भीष्म की चिकित्सा के लिए igpkA ijUr भीष्म ने उन्हें धन दिलाकर वापस कj fn;k vkj dgk fd bl voLFkk e igp tku ckn vc o|k dh D;k t:jr\ ;g ludj n;k/ku u /ku ndj o|k dk okil dj fn;kA

egkHkkjr e vk;on d opu jkek;.k dh Hkkfr ;=&r= gh feyr gA ;) dh r;kjh e oLrvk d lkFk o|k dh Hkh t:jr gkrh Fkh, क्योकि शत्रु लोग यवस, vklu] भूमि, जल, वायु आदि को विषमय कर देते हैं, उनका चिकित्सा–प्रतीकार करने d fy, o| का साथ में रहना आवश्यक है। इसलिए युधिष्ठिर ने वैद्यों को साथ में j[kk FkkA jkek;.k vkj महाभारत भारतीय संस्कृति के पृष्ठवंश हैं। l touh fo|k&egkHkkjr d vkfnio&v0&70 e ;;kfr d pfj= o.ku e ,d सरस लघु कथा बृहस्पति पुत्र कच और शुक्राचार्य की पुत्री no;kuh dh gA ,d ckj ऐश्वर्य के लिए देवता और असुरों में युद्ध हुआ। देवासुर संग्राम में fot; iku dh bPNk l norkvk u cgLifr dk viuk ijkfgr cuk;k vkj vljk u शुक्राचार्य को दोनों पुरोहितों में लाग–डाट थी। देवता जिन दानवों को युद्ध में मारते उशना viuh lthouh fo|k d cy l mUg iuh thfor dj nr FkA cgLifr d ikl lthouh विद्या नहीं थी। इसी से देवताओं ने बृहस्पति के पुत्र कच को शत्रु शक्राुचार्य के पास lthouh fo|k lh[ku d fy, Hktk A

dp u norkvk dh ;g ckr स्वीकार की और शुक्रkpk; d ikl tkdj cãp;&or धारण करके पॉच वर्ष वहॉ रहकर संजावनी विद्या सीखी। जब दानवों को bl Hkn dk irk yx x;k rk उन्होने उसे मार दिया। परन्तु शुक्रkpk; u viuh i=h no;kuh d dgu l ml पुनः जीवित कर दिया। इसी प्रकार दो बार हुआ। शक्राुचार्य dp dh HkfDr l vRlUr ilUu g, vkj ml lthouh fo|k dk ojnku fn;kA dp fo|k lh[kdj tc x: ?kj l ykVu yxk rc no;kuh u dp l fookg dk iLrko fd;k] ijUr dp u x:dU;k gku l ituh; ekudj mld प्रस्ताव को न माना। इससे रूष्ट होकर उसने कहा कि तुम्हारी यह fo|k Qyorh ugh होगी। इस पर कच ने उससे शांत भाव से कहा कि तुम्हारा यह वचन dke d dkj.k g] /ke l ugh] blfy, ftldk ;g fo|k lh[kk nxk mldk Qyorh gkxhA

Qfलश्यति न ते विद्या यत् त्वं मामात्थ तत् तथा।
अध्यापयिश्यामि तु यं तस्य विद्या फलिश्यति।।

lthouh fo|k l ;g Kkr gkrk g fd og er 0;fDr dk fQj l thfor dju dk ज्ञान था, इसका क्या रूप था, यह अज्ञात है। शारीरिक एवं मानसिक दो idkj d jkx rFkk शीत, उष्ण और वायु ये तीन शारीरिक रोगों के कारण तथा lUo] jt vkj re ; rhu eu

d x.k dgA कुष्B jkx–शान्तनु के बड़े भाई देवापि को कोढ़ी होने से राजगद्दी नहीं मिली FkhA उनका कुष्ठ रोग असाध्य रहा होगा जिस प्रकार कि विचित्रवीर्य का यक्ष्मा रोग Bhd ugh gvk FkkA

lUnHkZ xzUFk& lwph

-

आयुर्वेद का वैज्ञानिक इतिहास – आचार्य श्रीप्रियव्रत शर्मा चौखम्बा, वाराणसी, 1975-

vk;qosZn dk fodkl & jkefoykl]lkgxkjk] lkfgR;ok.kh] ofnd lkfgR; bykgkckn] 1990-

vk;qosZn lkj laxg & Jho|ukFk vk;qosZn Hkou fyfeVM] bykgkcknA

vkjksX;&vad ¼ dY;k.k if=dk ½ & xhrk izsl] xksj[kiqj 333

ऋग्वेद – स्कन्द भाष्य, सम्पा0 सी0 कुन्हनराजा, enkl] 1931-

ऋग्वेदभाष्यभूमिका – सायण, सम्पा0 बलदेव उपाध्याय बनारस 1934-

ऋग्वेदसंहिता – सायणभाष्यी, 1–5 भाग, वेदिक संशोधनमण्डल, पूना 1933–51-

यजुर्वेद संहिता – आर्ष साहित्य संस्थku] x:dy xkre uxj] fnYyhA

यजुर्वेद भाष्य – महर्षि दयानन्द सरस्वती, गुरूकुल गौतम uxj] fnYyhA

सामवेद संहिता – माधव–भरतस्वामिभाष्य,सम्पा0 dUgujktk]

ऐतरेयोपनिषद् – गीताप्रेस गोरखपुर 1965-

कठोपनिषद् – गीताप्रेस, गोरखपुर, 1966-

onksa esa vk;qosZn & Mk0कपिलदेव द्विवेदी, विश्वभारती अनुसंधान परिषद् वाराणसी–1993-

वैदिक देवशास्त्र – मैक्डॉनल अनु0 डॉ0सूर्यकान्त, पाणिनि पब्लिशर्स एण्ड प्रिंटर्स नई दिल्ली–1982-

वैदिक संस्कृति – गंगा प्रसाद उपाध्याय, सार्वदेशिक आर्य ifrfuf/k lHkk fnYyh] 1956-

ofnd lfgR;kssa esa vk;वेंद – डॉ0प्रतिभा रानी, परिमल पब्लिकेशंस fnYyh] 1989-

वैदिककोश – डॉ0सूर्यकान्त, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, okjk.klh] 1963-

ofnd okM~e; dk bfrgkl & i0 Hkxonnr] Hkkx 1&3

केनोपनिषद् – गीताप्रेस, गोरखपुर

pjd lfgrk & JhpØikf.knRr 0;k[;k ¼vk;qosZn nhfidk½ fu.kZ; lkxj izsl] cEcb] 1941-

fpfdRlk dk vkfn lzksr&on & ik0nonRr HkVV छान्दोग्योपनिषद् – गीताप्रेस, गोरखपुर 1965-

बृहदारण्यकोपनिषद – गीताप्रेस, गोरखपुर सं0 1999-

Hkkxorijk.k & xhrk izsl] xksj[kiqj

भारतीय दर्शन – पं0 बलदेव उपाध्याय, शारदा efUnj] okjk.klh&1966-

egkHkkjr & 1&6 Hkkx] xhrk izsl] xksj[kiqj l0 2014

माण्डूक्योपनिषद – गीताप्रेस, गोरखपुर, सं0 1995-

मैत्रायणी उपनिषद् – गीताप्रेस, गोरखपुर

JhenHkkxonxhrk & xhrk izsl] xksj[kiqj l0 2037-

द्विवेदी, विश्वनाथ – आयुर्वेद की ओषधियों व mudk oxhZdj.k] tkeuxj&1970-

शास्त्री, रामगोपाल – वेदों में आयुर्वेद, दिल्ली–1956.
शास्त्री महेन्द्र कुमार – आयुर्वेद का संक्षिप्त इतिहास, बम्बई–1948.
nc MkObrUn /kj & _xon e of.kr vk;onh; rRok dk leh{kkRed dk leh{kkRed v/;;u